बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्याय 8

अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण : अच्छा होना
चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।
## विषय-वस्तु

<table>
<thead>
<tr>
<th>परिचय</th>
<th>1</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>सृष्टि</td>
<td>2</td>
</tr>
<tr>
<td>परमेश्वर</td>
<td>2</td>
</tr>
<tr>
<td>अस्तित्व</td>
<td>2</td>
</tr>
<tr>
<td>अच्छाई</td>
<td>3</td>
</tr>
<tr>
<td>मनुष्यजाति</td>
<td>4</td>
</tr>
<tr>
<td>स्वरूप</td>
<td>5</td>
</tr>
<tr>
<td>आशीष</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>सांस्कृतिक आदेश</td>
<td>6</td>
</tr>
</tbody>
</table>

| पतन | 7 |
| स्वभाव | 7 |
| इच्छा | 8 |
| ज्ञान | 10 |
| प्रकाशन के प्रति पहुँच | 10 |
| प्रकाशन की समझ | 11 |
| प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता | 12 |

| छुटकारा | 14 |
| स्वभाव | 15 |
| इच्छा | 16 |
| ज्ञान | 17 |
| प्रकाशन के प्रति हमारी पहुँच | 17 |
| प्रकाशन की समझ | 17 |
| प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता | 18 |

| निष्पक्ष | 20 |
महमुय गुणों के द्वारा दर्शनशास्त्री और वैज्ञानिक कभी कभी रसायनविद्या नाम के एक कार्य में शामिल होते थे। यह सीमा जैसे एक समस्ती ध्यान को सीमा जैसी महंगी बस्तु तथा बदलने का प्रयास था। निम्नलिखित रसायनशास्त्री जानते थे कि सीमा को सीमा जैसा दिखाया जा सकता था या फिर किसी बस्तु के साथ मिलाया जा सकता था जिससे कि वह सीमा को दिखाया। परन्तु वे यह भी जानते थे कि सीमा में सीमा के सही गुण दालने के लिए उसके मूलभूत चरित्र को बदलने की जरूरत है। उससे वास्तव में सीमा बनना पड़ेगा।

लोगों के साथ भी ऐसी ही होता है। हमारे शब्द, हमारे विचार और कार्य हमारे मूलभूत चरित्र से संबंधित होते है। अर्थात् जिस प्रकार सीमा में सीमा के गुण नहीं हो सकते, वैसे ही भी भाषा चरित्र के लोग भले कार्य नहीं कर सकते। हमारे कार्य सदैव हमारे अस्तित्व को दर्शाते हैं।

यह हमारी बुंदला बाबुल पर आधारित निर्णय लेना का आदर्श अध्याय है। और हमारे इसका शीर्षक दिया है संस्कृति-बांधव-दृष्टि-को-अंत-होना। अंत-होना के इस अध्याय में हम इस बात पर ध्यान देना है ये कि किस प्रकार भलाई संस्कृति-बांधव-दृष्टि के संबंधित है ये भलाई और हमारे अस्तित्व के बीच संबंध को देखते हैं, अस्तित्व संबंधी दृष्टि को हमारी प्रकट को आरंभ करेंगे।

जैसा कि आप जानते हैं कि वे अंतों में बाबुल पर आधारित निर्णय लेना का हमारा मनुष्य यह रहा है कि नैतिक निर्णय लेने में एक व्यक्ति किसी विशेष परिस्थिति के प्रति परमेश्वर के बचन का लाभ करता है। हर नैतिक प्रण तीन मूलभूत पहलुओं पर बल देता है, अर्थात्, परमेश्वर का बचन, परस्परित्व, और निर्णय लेने बाला व्यक्ति।

नैतिक निर्णय के ये तीन पहलु उन तीन दृष्टिकोणों को दर्शाते हैं जो हमने इन तीनों अध्यायों में नैतिक विषयों के प्रति लिया है। निर्देशात्मक दृष्टि-को-अंत-होना परमेश्वर के संबंध के पर पल देता है और ऐसे प्रस्तुत देता है परमेश्वर के निर्देश हमारे कार्य के बारे में क्या दर्शाते हैं। परस्परित्व-संबंधी दृष्टि को-अंत-होना में या तः अंत-होना में हम उन लक्ष्यों के लिए परमेश्वर को प्रयास करने का प्रयास करते हैं। अंत-होना में हमारी प्रकट को एक अग्रदृष्टि करते हैं। अंत-होना में हमारे प्रस्तुत का प्रयास करते हैं। अंत-होना में हमारे प्रस्तुत का प्रयास करते हैं। अंत-होना में हमारे प्रस्तुत का प्रयास करते हैं। अंत-होना में हमारे प्रस्तुत का प्रयास करते हैं। अंत-होना में हमारे प्रस्तुत का प्रयास करते हैं।

जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में उल्लेख किया, अस्तित्व-संबंधी शब्द को विभिन्न दासहिनकों द्वारा विभिन्न रूपों में व्यवस्थापित किया गया है। परन्तु इस अनुच्छेद में हम इस शब्द का प्रयोग नैतिक प्रश्नों के मानवीय पहलुओं को दर्शाने में करेंगे। अर्थात्, अस्तित्व-संबंधी दृष्टि के शीर्षक तले हम हमारे चरित्र, हमारे रूप और रूप, हम कैसे लोग हैं और हमें कैसे लोग बनाया है जो विषयों पर ध्यान देंगे।

साफ साफ इस अनुच्छेद में, हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि एक व्यक्ति के प्रति हम अंत तो होता है जो कभी-कभी बुरा से बुरा अपराध भी ऐसे कार्य करते हैं जो अच्छे होते हैं। परन्तु एक अच्छा व्यक्ति होना एक दूसरे बात है। अंत-होना हमारी पहचानों, सम्पर्कों, और उत्साहों से जुड़ा होता है। अर्थात्, वे बातें जिसे बाड़ने व्यक्ति के बदले के रूप में बताती है।

“अंत-होना” के इस अनुच्छेद में हम बाड़ने व्यक्ति इतिहास के तीन मूलभूत चरित्रों के रूप में अस्तित्व और अच्छाई के बीच के संबंध को दर्शाते हैं। पहला, हम परमेश्वर की अच्छाई पर ध्यान देते हैं।

-1-

चर्चित, अस्तित्व-संबंधी दृष्टि का एक अन्य संदर्भ के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।
और फिर इस बात पर ध्यान देते हुए कि मनुष्य अच्छा था जब परमेश्वर ने पहले बनाया था, सृष्टि के समय की चर्चा करते। दूसरा, इस बात पर ध्यान देते हुए कि पाप ने किस प्रकार मनुष्य की अच्छाई को नुकसान पहुँचाया, अब उसके समय की ओर मुड़े। और तीसरा, हम छुटकारे के बारे में बात करते, जब परमेश्वर उन लोगों को पुनर्जीवित करता है जो उसके प्रति विश्वासयोग्य होते हैं और अच्छाई के लिए उन्हें सामर्थ्य देता है। आइए, सृष्टि के साथ आरंभ करें, वह समय जब उस अच्छे सुधिकर्ता को भाया कि वह एक अच्छे संसार को बनाये और उसमें अच्छे लोगों को रखे।

सृष्टि

सृष्टि के समय में अच्छाई पर हमारी चर्चा दो भागों में विभाजित होगी। पहला, हम परमेश्वर और उसकी अच्छाई के बारे में बात करेंगे और इससे इस वास्तविकता को रूप देंगे कि सारी सदी नैतिक अच्छाई स्वयं परमेश्वर से पाई जाती है। और दूसरा, हम चर्चा करेंगे कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपनी अच्छाई को दशाने के लिए मनुष्यजाति को बनाया था। अतः इस बिंदु पर परमेश्वर की अपनी अच्छाई को देखें।

परमेश्वर

जब हम इस बात को सोजते हैं कि अच्छाई परमेश्वर में पाई जाती है, तो हम परमेश्वर के अस्तित्व, विश्वास, उसके चरित्र पर ध्यान देते हुए आरंभ करेंगे। और फिर, हम उसके चरित्र के एक विषय पहलु पर ध्यान देंगे, अर्थात्, उसकी नैतिक अच्छाई। हम परमेश्वर के अस्तित्व की संख्या चर्चा के साथ आरंभ करेंगे।

अस्तित्व

ऐसी अनेक बातें हैं जो पवित्रस्त्र परमेश्वर के बारे में कहते हैं, परन्तु हमारे उद्देश्य के लिए हम उसकी मूर्ख विशेषताओं और उसके व्यक्तित्व के बीच संबंध पर ध्यान दें। सरल रूप में कहेंगे कि उसके संसाधन पर अच्छी समय वास्तव में पाई जाती है। हम परमेश्वर की विशेषता के अधिक हैं; वे परमात्मा करते हैं कि वह बौद्धिक है।

यह एक कारण है कि पवित्रस्त्र के लेखक उसकी विशेषताओं के अनुसार ही उसका सामान्यत: वर्णन करते हैं और उसका नाम रखते हैं। उदाहरण के तौर पर, 2 कूरिनिथियों 1:3 में उसे “करुणा का पिता” और “सब प्रकार की शांति का परमेश्वर” कहा जाता है। वह यह रेखाखंड 10:5 में “सबर्थात्मक परमेश्वर,” मलाकी 2:17 में “न्यायी परमेश्वर,” और इब्राइयों 13:20 में “शांतिदाता परमेश्वर” है। वह नीतिवचन 9:10 में दिखाया हैं “पाप पवित्र” और भजन संहिता 24:7-10 में “प्रतापी राजा” है।

यह बुधि ही और आगे बढ़ सकती थी, परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है: इस रूप में परमेश्वर की विशेषताओं को पहचानने से पवित्रस्त्र के लेखक हम परमेश्वर के बारे में एक व्यक्तित्व के रूप में सिला रहे थे, वे उसके आधार पर चरित्र का वर्णन कर रहे थे। उदाहरण के तौर पर, जब दादाज ने भजन 24 में यह कहा कि “प्रतापी राजा” कहा, तो उसका अर्थ केवल यह नहीं था कि परमेश्वर में कुछ महिमा था और वह कभी-कभी प्रतापी है। बल्कि उसका अर्थ कि परमेश्वर की महिमा उसके चरित्र का महत्वपूर्ण पहलु था, जो उसके व्यक्तित्व से अभिव्यक्त है और उसके अस्तित्व का मूल्य भाग है।

जब हम परमेश्वर के चरित्र पर चर्चा करते हैं तो वह याद रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर की सभी विशेषताएं, अपरिवर्तनीय हैं, अर्थात् वे कभी बदल नहीं सकती। उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर एक दिन
पतिव्रत किसी दूसरे दिन अपने नायक नहीं हो सकता। वह किसी एक समय सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी होकर किसी दूसरे दिन अपनी सामर्थ्य और ज्ञान में सीमित नहीं हो सकता।

परमेश्वर हमें यह कई स्थानों पर सिखाते हैं, जैसे ब्रजन 102:25-27, मलाकी 3:6, और याकूब 1:17। परन्तु समय की बदतमी के लिए आइये इनमें से एक ही देखें। याकूब 1:17 में याकूब के शब्दों को सुनें:

योगियों के पिता... में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है। (याकूब 1:17)

मृत्यु के समय हुए सारे परिवार और बच्चों के बावजूद हम आश्चर्य हो सकते हैं कि परमेश्वर जो है उससे बदलता नहीं है। आज भी परमेश्वर उन सारी विशेषताओं के साथ वही व्यक्तित्व है जो वह संसार की रचना में पहले था। वह यदेव एकसा रोगा।

परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बात करने के बाद हम उस अच्छाई की ओर मुड़ने के लिए तैयार होंगे जो परमेश्वर में है।

अच्छाई

जब हम नैतिक शिखर के सम्बंध में परमेश्वर की अच्छाई के बारे में बात करते हैं तो हमारे मन में उसकी नैतिक गूंजता और शिखना होता है। जैसे कि हमने पिच्छले अध्यायों में देखा था कि परमेश्वर सब्जपन्ने नैतिकता का परम स्तर है। अच्छाइ का कोई बाहरी स्तर नहीं है जिसके द्वारा उसका या हमारा न्याय किया जा सके। बल्कि, जो कुछ भी हमके चरित्र के सदृश्य होता है वह अच्छा होता है, और जो कुछ भी हमके चरित्र के सदृश्य नहीं होता वह बुरा होता है।

1 यूहू 1:5-7 “योग्यता” के सम्बंध में इस विचार को स्पष्ट करता है। यहां यूहू 1 ने इन शब्दों का लिखा:

परमेश्वर योग्यता है। और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें, कि हमके साथ हमारी सहचर नहीं है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम खुद हैं: और सत्य पर नहीं चलें। पर यदि जैस यह योग्यता है, वैसे ही हम भी योग्यता में चले, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते है; और उसके पुत्र पीतू का लघू हमें सब पापों से गुज़र करता है। (1 यूहू 1:5-7)

इस अनुच्छेद में योग्यता सत्य और नैतिक गूंजता की उपलब्धि है, वहीं अन्धकार को पाप और खुद के साथ जोड़ा जाता है। अतः क्योंकि परमेश्वर में अन्धकार नहीं है इसलिए हम अपने सारे अस्तित्व के हर पहलु में सिद्ध हुए। सोचें, नैतिक गूंजता होती है। दूसरे शब्दों में, अच्छाई परमेश्वर की एक मूलभूत विशेषता है।

अब जब हम परमेश्वर के अस्तित्व के संबंध में उसकी अच्छाइ के बारे में सोचते हैं, तो यह प्रारंभ फिर से दृष्टिकोण के रूप में सोचने में सहायता करता है। आपको याद होगा कि इस वस्तुता में कई बार हमने दृष्टिकोणों के महत्व के बारे में बात की है। उदाहरण के तौर पर हमारे वस्तुता में तीन प्रकार के दृष्टिकोण पाए जाते हैं: निर्देशात्मक दृष्टिकोण, परस्पर-संबंधी दृष्टिकोण, और अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण। और प्रत्येक दृष्टिकोण समग्र में नैतिक शिखर को एक अलग नए से दिखाता है।

परमेश्वर की विशेषताओं के बारे में भी ऐसी ही बात लागू होती है। परन्तु क्योंकि परमेश्वर में बहुत सारी विशेषताएं हैं, इसलिए उनके बारे में जिनकी अपेक्षा रत्न के रूप में सोचना ज्यादा सहायक होता है।
सरल रूप में कहें तो परमेश्वर की सभी विशेषताएँ उसके सम्पूर्ण अस्तित्व का दृष्टिकोण है। परमेश्वर की प्रत्येक विशेषता दूसरी विशेषताओं पर निर्भर होती है और उनके द्वारा महावृत्ति पर बनाई जाती है।

उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर की केवल तीन विशेषताओं पर ध्यान दें: अधिकार, न्याय, और अच्छाई। परमेश्वर का अधिकार अच्छा और न्यायी है। अथाहृत, यह अच्छा और न्यायी है कि परमेश्वर में यह अधिकार पाया जाता है और वह अच्छे एवं न्यायी रूपों में अपने अधिकार का उपयोग करता है। इसी प्रकार, उसका न्याय अधिकारिक और अच्छा है। जब परमेश्वर न्याय करता है तो वह सदीय आधिकारिक और न्यायी होता है। और इसी प्रकार उसकी अच्छाई आधिकारिक और न्यायी है। उसकी अच्छाई न्याय को बढाती है और उनको आचरण करती है जो न्याय-पसंद होते हैं, और यह ऐसे आधिकारिक स्तर को त्यापित करती है जिसके द्वारा सारी अच्छाई का जाना जाता है।

पार्श्वपर्वस्य रूप से, धर्मवेज्ञानिकों ने परमेश्वर की सादगी के शैक्षणिक तलए परमेश्वर की विशेषताओं के अंतर-संबंध के बारे में बात की है। इस शब्द से धर्मवेज्ञानिकों का अर्थ था कि परमेश्वर भिन्न असंस्कृत भागों का कोई संकलन नहीं है, बल्कि परम संसार का एकीक अस्तित्व है। या हमारे रत के उदाहरण का प्रयोग करने तो वह कोई गहना नहीं है जिसमें कि कई रन हो, बल्कि एक रन है जिसके कई पश्चात है।

इस वास्तविकता को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका अर्थ है कि परमेश्वर के अस्तित्व में ऐसा कुछ भी नही है जो उसकी अच्छाई का विरोधी हो या हमारे लिए एक विरोधी स्तर है। उदाहरण के तौर पर, हम कभी भी उसकी अच्छाई की बातों का विरोध करने के लिए परमेश्वर के न्याय की अपील नहीं कर सकते। परमेश्वर के चारित में यदि कुछ न्याय-संगत है तो वह अच्छा भी है। और यदि यह अच्छा है तो यह आचार्यक कुछ से न्यायी भी है। उसकी विशेषताओं हमेशा एक-दूसरे में सहबंत होती हैं क्योंकि वे सदीव समान समाप्ती, एक स्वतंत्रता का वर्ण करती है।

यह देखने के बाद कि सारी सृष्टि नैतिक भलाई परमेश्वर के अस्तित्व पर आधारित है, अब हम इस वास्तविकता पर ध्यान देने के लिए तैयार हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य को अच्छा बनाया था। अर्थात, उसने अपनी व्यक्तिगत भलाई को प्रकट करने के लिए हमारी रचना की थी।

मनुष्यजाति

उपर्युक्त अध्याय 1 में सूची दे के वर्णन से सब महसूस होता है। हम सब जानते हैं कि परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, और उसे आकार देने के लिए वाताला। और हम जानते हैं कि उसने अपने निवासियों को भी रखा कि वह खाली न रहे। और निश्चित, सृष्टि के समाय नीचे के बदले में कुछ कृति छठे दिन मनुष्यजाति की रचना थी। उपर्युक्त 1:27-28 को इस मुद्दे पर दिखाया है:

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया,.... और परमेश्वर ने उन को (मनुष्यजाति) आश्रित दिया: और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने बेन में कर लो; और समुद्र की मछिलियों, तथा आकाश के पश्चिम, और पृथ्वी पर रोगाने वाले सब जनुओं पर आधारित रखो।

(उपर्युक्त 1:27-28)

मनुष्यजाति की अच्छाई के बारे में हमारी चर्चा पढ़ गए इस पदों में पढ़ जाने वाले मनुष्य की सृष्टि के तीन वर्णनों पर ध्यान देना। फिरह, हम इस वास्तविकता पर ध्यान देंगे कि मनुष्यजाति को परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया, अर्थात् परमेश्वर का दृष्टियोग प्रतिनिधित्व जो उसकी अच्छाई को दर्शाता है।

दूसरा, हम मनुष्यजाति पर आशीर्वाद के बारे में बात करेंगे और तीसरा, हम उस सार्वजनिक
आदेश का उद्देश्य करते हैं जो परमेश्वर ने मनुष्यजाति को दिया है। आईये, सृष्टि के समय मनुष्यजाति द्वारा लिए गए परमेश्वर के स्वरूप के साथ आरंभ करें।

स्वरूप

जैसा कि उल्लेख 1:27 में मूसा ने लिखा था:

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया। (उल्लेख 1:27)

अब, जब धर्मवैज्ञानिक परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मनुष्यजाति के बारे में बात करते हैं तो वे प्रायः विवेक, आत्मिकता, नैतिक प्रौद्योगिकी, आत्मिकता और हमारी मूल धार्मिकता जैसी विशेषताओं के बारे में बात करते हैं।

परन्तु परमेश्वर के स्वरूप को साफ़ करने का श्रेय एक स्वतंत्र तरीका यह देखना है कि किस प्रकार प्राचीन संसार स्वरूपों को समझा था। उल्लेख के लिए जाने के समय राजा के लिए ये एक आम बात थी कि वे अपने राजा के लिए अन्य मूर्तियों और दैविकों को लगाते थे। इन मूर्तियों को बहुत सम्मान दिया जाता था क्योंकि वे राजा के प्रतिनिधि थे। वे लोगों को उससे प्रेम करने, उसका सम्मान करने और उसकी आज्ञा मानने की याद दिलाते थे।

इसी प्रकार, सारी सृष्टि में महान राजा परमेश्वर ने मनुष्यजाति को अपनी जीवित दैविक और दैविक स्वरूपों के रूप में व्यक्त किया। अतः जब हम एक मनुष्य को देखते हैं तो हम उस स्वरूप को देखते हैं जो हमें परमेश्वर की याद दिलाता है। और जब हम गलत रूप से मनुष्य का असमान करते हैं तो हम उस परमेश्वर का असमान करते हैं जिसका स्वरूप वे हैं। उदाहरण के लिए उल्लेख 9:6 पर ध्यान है जहाँ परमेश्वर ने यह निर्देश दिया:

जो कोई मनुष्य का लाहू बहाए उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाए जैसे कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है। (उल्लेख 9:6)

इतने कारण जिसके लिए हमारी दैविक स्थिति को मूर्ति की सजा की जाती है वह सर्वाधिक नहीं है कि उन्होंने मनुष्य की जान तो यह, परन्तु इसलिए कि हमें परमेश्वर के स्वरूप पर आकर्षण किया था, हमें महान राज तथा समापन के विकसित आकर्षण किया था।

इससे बढ़कर, प्राचीन संसार ने दैविक स्वरूपों को दैविक पुनर्जन्म से भी जोड़ा। विशेष तौर पर, प्राचीन राजाओं को देवताओं के स्वरूपों और देवताओं के पुजों के रूप में भी सोचा जाता था। अतः उल्लेख में जब परमेश्वर ने नर और नरी को अपने स्वरूप में बनाया तो उसने मनुष्यजाति को अपने शाही व्यतीत के रूप में चढ़ाया।

बातचीत में, परमेश्वर के प्रतिनिधि और उसकी संस्थान होने के लिए यह मनुष्यजाति की भूमिका है जो उस अनेक निष्कर्षों के आधार की रचना करते हैं जो हम हमारी अच्छाई से निकालते हैं। क्योंकि परमेश्वर चाहता था कि हम उसके प्रतिनिधि और उसकी संस्थान बनें, उसने हमें ऐसी विशेषताओं के साथ रचा जो उसकी सिद्धांतों को दर्शाती थी। विशेष, मनुष्यजाति विशेष परमेश्वर जैसी नहीं थी कि वह हर रूप में पूरी तरह से शिष्य रहे। परन्तु हमें बिना गुटी और बिना पाप के, बल्कि परमेश्वर के चरित्र के स्तर के समान रचा गया था। इस रूप में, परमेश्वर ने मनुष्यजाति को हमारे अस्तित्व में हमारी अपनी अच्छाई की विशेषता के साथ स्थापित किया।

चलचित्र, अभ्यास: मार्गदर्शक 3rdmill.org पर जाएँ।
आधारित निर्देश ने उन्हें अध्ययन करने का आशीर्वाद दिया है जब हम उनके अनुसार परमेश्वर के साथ संबंधित हैं। (उत्तरादि 1:28)

अपने साथ ही उन्हें अध्ययन करने का आशीर्वाद दिया है जब हम उनके अनुसार परमेश्वर के साथ संबंधित हैं। (उत्तरादि 1:28)

अपने साथ ही उन्हें अध्ययन करने का आशीर्वाद दिया है जब हम उनके अनुसार परमेश्वर के साथ संबंधित हैं। (उत्तरादि 1:28)
अन्दर अच्छाई की विशेषता दी थी एवं पाप की भ्रष्टता से दूर रखा था। फलस्वरूप, हम नैतिक रूप से अच्छे मार्गों को चुन सकते थे और उनके अनुसार कार्य कर सकते थे।

अतः हम देखते है कि परमेश्वर के लिए और मनुष्यजाति के लिए, अच्छाई हमारे अस्तित्व में रैथाणित थी। परमेश्वर का अस्तित्व अपरिवर्तनीय है और इसलिए उसकी अच्छाई भी अपरिवर्तनीय है। परन्तु दुर्बिन्नवश, मनुष्यजाति का अस्तित्व बुरई में बदल गया। परमेश्वर ने हमें जम्मजात अच्छाई के साथ रचा था। परन्तु जैसा कि हम देखेंगे, पाप ने हमारे अस्तित्व को भ्रष्ट कर दिया जिससे कि यह फिर अच्छाई का स्थान नहीं रहा।

यहाँ पर हमने सुष्टि के समय प्रकट अच्छाई और अस्तित्व के बीच संबंध को देखा लिया है, इसलिए अब हम पाप के समय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं। विशेषकर हम देखेंगे कि किस प्रकार पाप ने मनुष्यजाति के अस्तित्व को क्षति पहुंचाई और हमारी अच्छाई को नष्ट किया।

पतन

हम सब मनुष्यजाति के पाप में पतन के बाइबल के वर्णन से परिचित हैं, जो कि उत्पति 3 में पाया जाता है। परमेश्वर ने आदम और हवा को बनाया और उन्हें अदन की बातिक में रख दिया। और यथापूर्व, हम उसे नमस्कार की आदम आजादी थी, परन्तु इसके साथ-साथ विशेष निषेधाज्ञा भी थी जैसा कि उनके भले ही और उसे जान के बुरे के वृत्त के फल के लायक थे।

परन्तु नीसदेह, साप ने हवा को वह फल खाने का लालच दिया और उसे वह फल खा लिया। तब उसे धोड़ा था पाप आदम को भी दिया और उसे भी खा लिया। और पतन रूप उसकी दुरुस्ति में पतन हो गया, परमेश्वर ने आदम और हवा को भर्तिकर परिणामों के साथ घाय दिया जो उसे केवल उन पर लागू हुए वाले उस सारी मनुष्यजाति के पूरे लागू हुए जो उनके द्वारा आयी थी।

हम मनुष्यजाति के पाप में पतन के तीन परिणामों की चर्चा करेंगे। पहला, हम हमारे स्वभाव की भ्रष्टता के बारे में बात करेंगे। इससे, हम देखेंगे कि पाप के कारण हमारी इच्छा पाप की गुणात्मक हो गयी। जिससे कि हम नैतिक रूप से अच्छी बातों को चुनने के लिए भ्रष्ट हो गयी। और उससे, हम उन रूप की चर्चा करेंगे जिसमें पाप ने हमारे जान को प्रभावित किया जिससे कि हम नैतिक अच्छाई को पूरी तरह से पहचानने में अवश्यक हो गया। आठवे, हम हमारे स्वभाव की भ्रष्टता के बारे में बात करेंगे जो मनुष्यजाति के पाप में पतन के समय हुआ।

स्वभाव

जब हम मनुष्यों के स्वभाव के बारे में बात करते हैं तो हमारे मन में हमारा मूलमूल्य चरित्र, अर्थात् हमारे अस्तित्व के मूल्य पहलू हैं।

जैसा कि हम देख चुके हैं, उन्होंने विशेषता का और यथा हमारे अस्तित्व और नैतिक रूप के लिए पाप दिया। उनके लिए चरित्र और विशेषताएं अच्छी थीं और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली थीं। और इसलिए, हम कह सकते हैं कि सृष्टि के समय मानवीय स्वभाव नैतिक रूप से अच्छा था। परन्तु पाप के समय परमेश्वर ने आदम और हवा को उनके पाप के कारण घाय दिया। और इस घात के एक भाग के रूप में हम उनके स्वभाव को बदल दिया जिससे कि मनुष्यजाति का आधारभूत चरित्र नैतिक रूप से अच्छा नहीं रहा।

रोमियो 5:12, 19 में पीलुस ने आदम को दिए घात के बारे में यह बताया लिखा:

-7-

चलित, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएं।
एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया... एक मनुष्य के आज्ञाने मानने से बहुत लोग पापी ठहरे। (रोमियो 5:12, 19)

अदाम के एक पाप का परिणाम हुआ कि सारी मनुष्यजाति का पाप में पतन हो गया। और मनुष्यजाति पर राष्ट्र के प्रभाव से हम सब का स्वभाव भी भ्रष्ट हो गया जिसके कारण मृत्यु और पाप आये। 

रोमियो 8:5-8 को सुनें जहाँ पौलस ने पतन के प्रभावों का वर्णन इस प्रकार से किया:

शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं... क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बेहतर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की चुनने से आदर्शता है, और न हो सकता है। और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। (रोमियो 8:5-8)

पतित मानवजाति का स्वभाव इतना भ्रष्ट हो गया कि अब यह नैतिक रूप से अच्छा नहीं रहा।

इसके विपरीत हमारा पतित स्वभाव भुग है। हम पाप की अभिलाभ करते हैं। हम परमेश्वर से चुना करते हैं। हम उसकी लवकथा के विरुद्ध विद्वेष करते हैं। हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। और हम उसके अनुमोदन या आदर्श को प्रसन्न नहीं कर सकते।

हमारे स्वभाव की भ्रमता के बारे में बात करने के बाद, हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि किस प्रकार मानवीय इच्छा पतन के फलस्वरूप पाप की गुलाम या दास हो गई।

इच्छा

हमें इच्छा की परिभाषा देने के साथ आर्य्य करना चाहिए। विशिष्ट रूप से जब धर्मविज्ञानिक हमारी इच्छा के बारे में बात करते हैं, तो उनके मन में निर्देश लेने, चुनने, लालसा रखने, आशा रखने और इरादा करने की त्वरितता होती है। हम प्रभाव के प्रमाण देिने या चुनने में करते हैं, और इसके साथ-साथ हम चुनना, रखना या अनुभव करना चाहते हैं के बारे में सोचने में भी करते हैं।

अब, हमारे शेष विशेषताओं और क्षमताओं के समान हमारी इच्छा हमारे राष्ट्र को दर्शाती है।

पतन से पहले मानवीय इच्छा सिद्ध थी। इसकी रचना परमेश्वर और उसके चरित को दर्शाने के लिए हुई थी, और यह नैतिक रूप से अच्छे तरीकों से सोच और चुन सकती थी। परन्तु हमी यह पतन हुआ मानवीय इच्छा भी ऐसी हो गयी कि यह ऐसे निर्देश लेने तथा जिसप्रसन्न प्रसन्न नहीं हुआ।

जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, पतन में अदाम और ह्या ने परमेश्वर के प्रति भक्तिकी अपेक्षा पाप को चुनने में अपनी इच्छाओं का प्रयोग किया। और इसलिये परमेश्वर ने मनुष्यजाति को राष्ट्र दिया। और इसका एक परिणाम यह रहा कि हमारी इच्छाएं भ्रष्ट हो गयीं, और हमारे लिए असंभव हो गया कि हम परमेश्वर को प्रसन्न करे।

रोमियो अध्याय 6-8 में पौलस मनुष्यजाति को दिया गए इस राष्ट्र का वर्णन करने के लिए दासत्व के रूपक का प्रयोग करता है। उससे दर्शाया कि पाप पतित मनुष्यों में बास करता है, हमारी इच्छाओं को दास बना लेता है ताकि हम सदैव पाप की अभिलाभ करें और उसे ही चुने। रोमियो 8:5-8 को एक बार फिर सुनें जहाँ पौलस ने इन शब्दों को लिखा:

शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं... क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बेहतर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की चुनने से आदर्शता है।
और न हो सकता है। और जो शास्त्रीय दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। (रोमियों 8:5-8)

पाप पतित मनुष्यों को वश में कर लेता है और हमारे लिए इस बात को असभ्य बना देता है कि हम परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति समर्पित रहें या उसे प्रसन्न करने के लिए कुछ भी करें।

अब इसका अर्थ यह नहीं कि हम अब कभी भी चुनौती नहीं करें। इसके विपरीत हम सिर्फ हमारे स्वभाव के अनुसार इसका कर सकते हैं और चुनते हैं। परन्तु क्योंकि हमारा स्वभाव भ्रम हो गया है इसलिए हम वह कुछ भी कर सकते हैं जो परमेश्वर को सम्मान और महिमा दे। पाप उस सबको दूषित या कलंकित कर देता है जो हम चुपचाप, करते या नहीं करते हैं।

अब पहली नजर में पतित मनुष्य का यह मूल्यांकन शादी अतिशयोक्ति महसूस होता है। आखिरकार पाप या लोग ऐसे कार्य करते हैं जो निभाये हुए रूप से अच्छे प्रतीत हों। एक भाव इस बात का इंकार नहीं करता है और अन्य करते हैं। परन्तु हमें सदैव इस सत्ता के बाहर देखने में साधन धारण करते हैं ताकि हम उन बातों को समझ सकें जो पतित और छूटकारा नहीं पाए हुए लोग करते हैं।

आप यदि करेंगे कि इस श्रृंखला में पहले भी हम इस जिले विश्व की स्पष्ट प्रकट करने के लिए विश्वास के वेस्टमिन्स्टर अंग्रेजीकरण अध्याय 16, अनुसंधान 7 की और मुड़े थे। सुनिए एक बार फिर से कि यह क्या कहता है:

वे शब्द बहुत अच्छी तरह से पुनः जन्म न पाए, अर्थात मसीह के द्वारा छूटकारा नहीं पाए हुए लोगों की नैतिक अस्तित्व के बारे में बाइबल की शिक्षाओं को सार्गर्भित करते हैं। और जैसे कि अंग्रेजीकरण कहता है, ऐसा भाव भी है जिससे पुनः जन्म न पाए हुए लोग परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं, और ऐसा भाव भी है जिसमें वे अच्छे कार्य भी करते हैं।

यीशु ने यही सिद्धांत मत्र 7:9-11 में सिखाया था, जहाँ उसने इन शब्दों को कहा था:

तुम में से ऐसा कोई मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उस से रोटी मांगे, तो वह उसे पत्तर दे? वा मछली मांगे, तो उसे सांप दे? ऋषि जब तुम चुंब होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देगा जानते हैं, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा? (मत्र 7:9-11)

अधिकार लोग कम से कम कुछ कार्य ऐसे करते हैं जो बाहरी रूप से अच्छे होते हैं, जैसे कि अपने बच्चों से प्रेम करना और उनकी जहरतों को पूरा करना। अत: ऐसा सत्ताही भाव भी है जिसमें अविश्वासी ऐसे त्यागी को दर्शाते हैं जिन्हें परमेश्वर आशीर्वाद देता है।

फिर भी, वेस्टमिन्स्टर अंग्रेजीकरण सत्भूष में ऐसा कार्य वास्तव में पाप मानते हैं और परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। और उसका कारण यह है कि वे कार्य धर्मी होने की कुछ ही आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

-9-

चलचित्र, अध्ययन मागदास्तिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।
अगीकरण यह दर्शात है पवित्रसाध्य की शिष्याओं को सार्गर्भित करता है कि हमारे कार्य का वास्तव में अच्छा होने के लिए पांच परस्त्रों से होकर जाना जरूरी है। पहला, ये ऐसे कार्य होने चाहिए जिनकी आज्ञा की परमेश्वर के द्वारा देती है। दूसरा, वे अपने और दूसरों के लिए अच्छे इस्तेमाल के होने चाहिए।

तीसरा, ये एक ऐसे हद से आने चाहिए जो विश्वास से गुढ़ किया गया हो। चौथा, वे सही रूप में किया जाने चाहिए और पांचवा, वे एक सही लक्ष्य, अर्थात् परमेश्वर की महिमा, के साथ किये जाने चाहिए।

यह दृष्टिकोण नैतिक ज्ञान के उस दृष्टिकोण के अनुसार ही है जो हमने इस पूरी व्यवस्था में अपनाया है। पहला, यह वास्तविकता कि अच्छे कार्य वे होते हैं जिनकी आज्ञा परमेश्वर देता है और जो निर्देशात्मक दृष्टिकोण के समानांतर है जिसमें सारे कार्य का निर्णय परमेश्वर के चरित्र के स्तर के अनुसार किया जाता है जैसा कि उसके वचन में दर्शाया जाता है।

दूसरा, अच्छे प्रयोग, सही लक्ष्य और सही तरीके पर दिया गया बाल परिस्थिति-संबंधी दृष्टिकोण की वास्तविकताओं, लक्ष्यों और साधनों की सार्गर्भित करता है।

और तीसरा, यह वास्तविकता कि अच्छे कार्य एक ऐसे हद से आने चाहिए जो विश्वास से गुढ़ हो, यह अर्थात्-संबंधी दृष्टिकोण के समानांतर है जिसमें अधिकारिक अच्छे कार्य ऐसे लोगों के द्वारा किये जा सकते हैं जिनकी अच्छाई परमेश्वर में विश्वास के द्वारा पुनःस्वार्थित की गयी है।

दुभाव्यवह, पवित्र मनुष्यजाति होने के कारण हमारे अस्तित्व भ्रष्ट है जिसमें हमारे अन्दर स्वाभाविक रूप से वे हद नहीं हैं जो विश्वास से गुढ़ हो। और हमारी इच्छा सही लक्ष्य वाली बातों की अभिलाषा या कोशिश नहीं करती। और हम परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति समर्पित होने से इंकार कर देते हैं। अतः, जब पुनः जन्म न पाए हुए लोग भी अच्छे चुनाव कर सकते हैं जो सतही रूप से अच्छे दिखते हों, पर्य ये चुनाव वास्तव में अच्छे नहीं होते।

यहाँ पर हमने यह देखा है कि किस प्रकार पतन ने हमारे स्वभाव को भ्रष्ट कर दिया है और पाप के प्रति हमारी इच्छा को दायें बना दिया है, इसलिए अब हम हमारा ज्ञान के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं, जिसमें हम विशेष रूप से इस बात पर ध्यान देंगे कि पतन ने परमेश्वर के स्तर को समझने में हमारी योग्यता को किस प्रकार हानि पहुँचाई है।

ज्ञान

पतन हमारे नैतिक ज्ञान को प्राप्त करने की योग्यता को हानि पहुँचा सकता है यानी इस बारे में बात करना हम से कुछ को अर्जित प्राप्त होता है। आसिरिक, अविश्वासी बातचीत को उठाकर इसकी आज्ञाओं को समझ सकते हैं। और पवित्रशास्त्र स्वयं पुष्टि करता है कि अविश्वासी भी परमेश्वर के बारे में बहुत सी सच्ची बातें जानते हैं। परंतु जब हम पवित्रशास्त्र को और अधिक गहराई से देखते हैं, तो हम पाते हैं कि यथार्थ पति और छुटकारा न पाए हुए मनुष्य कुछ स्थळी ज्ञान को रक्षते हैं, परंतु पतन ने उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं के उचित ज्ञान को प्राप्त करने से रोक दिया है।

नैतिक ज्ञान पर पतन के प्रभाव की हमारी कहाँ तीन भागों में विभाजित होगी। पहला, हम यह बात करेंगे कि किस प्रकार पाप प्रकाशन की ओर मनुष्यजाति की पहुँच को बाधित करता है। दूसरा, हम यह उल्लेख करेंगे कि किस प्रकार पाप प्रकाशन के बारे में मनुष्य की समझ को बाधित करता है। और तीसरा, हम प्रकाशन के प्रति मनुष्यजाति की आज्ञाकारिता पर पाप के प्रभाव की जाँच करेंगे। आइए हम इस बात से आरंभ करें कि किस प्रकार प्रकाशन के प्रति मनुष्यजाति की पहुँच पतन से बाधित हुई है।

प्रकाशन के प्रति पहुँच

एक मुख्य तृतीय जिसके द्वारा पतन ने मनुष्यजाति के प्रकाशन के प्रति पहुँच को बाधित किया है, यह है प्रकाशन देने और आंतरिक अनुवाद के पाथित्व आत्मा के कार्य को सीमित करना। अब, यह इसलिए
नहीं कि पवित्र आत्मा किसी तरह से पतित मनुष्यजाति के प्रति सेवा करने में अक्षम है। बल्कि, यह इसलिए है कि परमेश्वर ने इन देवीय वरदानों से दूर करते हुए मानवजाति को श्राप दिया था।

जैसा कि आप हमारे पिछले अध्यायों से याद करेंगे, प्रकाशन ज्ञान या समझ का देवीय वरदान है जो कि मूर्त रूप से बौद्धिक है, जैसे कि यह ज्ञान कि यीशु मसीह है, जो पतनस है मती 16:17 में प्राप्त किया था।

और आत्मिक अगुवाइ ज्ञान या समझ का वह देवीय वरदान है जो मूर्त रूप से भावनात्मक है। इसमें अंतःकरण जैसी बातें आती हैं, और यह भाव भी कि परमेश्वर हमसे एक विशेष कार्य कराएगा।

किसी भाव में, परमेश्वर सारी पतित मनुष्यजाति को एक माप में प्रकाशन और आत्मिक अगुवाइ दोनों प्रदान करता है। उदाहरण के तौर पर, ग्रेगोरियासिस के पास भी परमेश्वर की व्यवस्था का नेतृत्व ज्ञान होता है। उनमें से अधिकांश न्याय को पाते हैं और यह पहचानते हैं कि चीरी कार्य और हर्षा करना गलत है। इसी प्रकार, ग्रेगोरियासिस के द्वारा चेतावनी जाती हैं जब वे कोई पाप करते हैं।

परंतु पवित्र आत्मा ग्रेगोरियासिस को प्रकाशन और आत्मिक अगुवाइ उस माप में प्रदान नहीं करता जितना वह विविधों को प्रदान करता है। वह उनके भीतर इतना ही काम करता है कि वह परमेश्वर के निमित्त की अवहेलना करने के कारण उनको दोषी ठहराए। और इसका कारण सरल है: परमेश्वर ने इस प्रकार अपने आपको प्रकट करने को चुना था जो उसमें प्रेम करने वालों को आशीर्वाद दे और उससे गुणाकार बनने वालों को श्राप दे।

यीहुआ 17:26 को तुलना करें, जहाँ यीशु ने पिता से इन शब्दों में प्रार्थना की:

और मे ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उन में रहे और उन में रहें। (यीहुआ 17:26)

यीशु ने परमेश्वर और अपने लोगों के बीच प्रेम और एकता को स्थापित करने के लिए विविधों के समक्ष अपने आपको रखा। इसके सिद्धांत, जब अपने शुरुओं को अपना केवल थोड़ा सा ज्ञान देता है, केवल इतना ही की वह उन्हें अलांकृत करने में सक्षम होता है।

पतित मनुष्यजाति की प्रकाशन के प्रति पहुँच को कम करने के अतिरिक्त, पतन ने प्रकाशन के प्रति मनुष्यजाति के ज्ञान को भी बाढ़ पिता किया।

प्रकाशन की समझ

पाप में मनुष्यजाति के पतन ने परमेश्वर के प्रकाशन के प्रति हमारी समझ की योग्यता को कम कर दिया है। यद्यपि पतित मनुष्य प्रकाशन को काफी हद तक समझ सकते हैं, परंतु हम में अनेक बातों की कमी है जो उसे समझने के लिए जरूरी है। हमारे पास अब भी परमेश्वर के प्रकाशन की मूल शिक्षाओं को समझने की योग्यता है। परातू नैतिक समझ मात्र बौद्धिक समझ से अधिक बातों पर निर्भर होती है; इसमें समृद्ध व्यक्तित्व शामिल होता है।

हमारे नैतिक निःशुल्क विविधता को अलग-अलग मूल्यांकन नहीं है। बल्कि अनेक गैर-बौद्धिक कारण हमारे नैतिक मूल्यांकनों को प्रभावित करते हैं, जैसे हमारी भावनाएं, विवेक, अंतःकरण, व्यक्ति, अभिलाषाएं, डर, असफलताएं, परमेश्वर का व्यवहारिक विरोधक, एवं और भी बहुत कुछ।

मती 13:13-15 में यीशु ने इस समस्या का उल्लेख किया जब उसने दृष्टान्तों के अपने इतिहास को रूपांतरित किया था।

ये देखते हुए नहीं देखते; और सुनते हुए नहीं सुनते; और नहीं समझते। और उन के विचार में यह भविष्यवाणी पूरी होती है, कि तुम काफी से तो सुनोगे, पर समझ नहीं; और डूब ते से तो देखोगे, पर तुम नः सुहाग। क्योंकि इन लोगों

-11-

चलित, अभिव्यक्ति, नासंगति, एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmillet ऑनलाइन पर जाएँ।
का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊपर सुनते हैं और उन्होंने अपनी आंखें खुद ली हैं। (लति 13:13-15)

पतित मनुष्यों के पास परमेश्वर के प्रकाश को प्राप्त करने के लिए आंखें और कान होते हैं। परन्तु हमारे हदय परमेश्वर और उसके सत्य के विरुध्क कठोर हो जाते हैं। और यह प्राप्त है: हमें उस प्रकाश का समझने से रोक देता है जो हम प्राप्त करते हैं।

इफिसियों 4:17-18 में पौलस ने इस प्रकार इस समस्या के बारे में बताया था:

जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनथ की रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी बुद्धि अनुभेदी हो गई है और यह उस अन्यजाति के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण है। (इफिसियों 4:17-18)

पतन में हुई मनुष्यजाति की भ्रष्टता का परिणाम यह हुआ कि हमारे हदय कठोर हो गए। और यह कठोरता हमें परमेश्वर के प्रकाश को उचित रूप से समझने से रोकती है।

कई रूपों में हमारा तर्क और हमारी बुद्धि वैसे ही कार्य करते हैं जैसे उसने करना चाहिए। और यह एक कारण है कि परमेश्वर अपने प्रकाश का समझने के लिए हमें जिम्मेदार ठहराता है। परन्तु पतन ने हमें भ्रष्ट कर दिया है जिससे हम परमेश्वर का विरोध करते हैं और उसके सत्य को नहीं मानते। अरे: परमेश्वर से इस प्रकार जान को स्वीकार करने की अपेक्षा हम अपने आपको उस बुद्धि बातों में लगा देते हैं जो हमारे पापी हदय सोचता है।

यह देखने के बाद कि पतित मनुष्यजाति की प्रकाश के प्रति पहुंच सीमित है और प्रकाश की समझ भी भूलकर है, अब हमें यह देखने की ओर मुड़ना चाहिए कि प्रकाश के प्रति हमारी आज्ञाकारिता भी पतन के कारण भ्रष्ट हो गयी है।

प्रकाश के प्रति आज्ञाकारिता

अब आज्ञाकारिता को जान के एक पहलू के रूप में सोचना शायद अर्जी प्रतीत हो। अस्मिन्ना, हम सामान्यतः सोचते हैं कि प्रकाश हमें जान प्रदान करता है, और हम आज्ञाकारिता को एक अलग कस्ट के रूप में सोचते हैं जो जान के बाद आता है। और एक ऐसा भाव भी है जिसमें यह ठीक भी है। परन्तु एक अलग भाव यह भी है जिसमें जान और आज्ञाकारिता मूल रूप से एक ही चीज है। और इस भाव में, पतन परमेश्वर की आज्ञा मानने की हमारी योग्यता को नाघ करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति हमारे जान को बाधित करता है।

इस बात को समझने के लिए कि किस प्रकार परमेश्वर की आज्ञा मानने की हमारी योग्यता उसके स्वर के हमारे जान को बाधित करती है, हम जान और आज्ञाकारिता के बीच के संबंध के केवल दो पहलुओं पर ध्यान देंगे। पहला, पवित्रार्थ में आज्ञाकारिता और जान के बीच एक आपसी संबंध है। और दूसरा, हम उन कुछ रूपों को देखेंगे जिसमें यह कहा जा सकता है कि वाइबल में ये दो विचार एक-दूसरे से अलग है। इस बात का साथ आभार करेंगे कि आज्ञाकारिता परमेश्वर के जान और उसके स्वर को अगुवाई करती है।

पवित्रार्थ में आज्ञाकारिता और जान के बीच एक आपसी संबंध है। एक और परमेश्वर का जान परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता को उत्पन्न करता है। हम इसे 2 पतरस 1:3 जैसे अनुकूल देखते हैं जहाँ पतरस ने ये शब्द लिखे:
बाइबल पर आधारित निर्णय लेना
अभ्यास 8: अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण: अच्छा होना

क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया गया है, जिसे हमें अपनी ही महिमा और सदगुण के अनुसार बुलाया है। (2 पत्र 1:3)

यहाँ ज्ञान को हमारे जीवन में जीवन और भक्ति को उत्तम करने के उद्देश्य के लिए दिया गया है।

पुनः, यह उस तरीके का अनुसरण करता है जिसकी हम अपेक्षा करते हैं, यह सब हम परमेश्वर के प्रकाश को प्रस्ताव करते हैं, और समझते हैं कि हम आज्ञापूर्वक उसे हमारे जीवन में लागू करते हैं। परन्तु अगर हम इसे उद्देश्य कर दे तो वह भी यहाँ है। पवित्रस्वरूप में आज्ञाकारिता के लिए ज्ञान पहली आवश्यकता है, और परमेश्वर के प्रकाश का हमारे जीवन में आज्ञापूर्वक पालन उसके ज्ञान की ओर हमारी अनुगामी करता है। जैसा कि नीतिवन 1:7 हमें सिखाता है:

यहोवा का भय मानना बुझ का मूल है; बुझ और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं। (नीतिवन 1:7)

और हम नीतिवन 15:33 में पढ़ते हैं:

यहोवा के भय मानने से शिक्षा प्राप्त होती है, और महिमा से नखली नहीं होती है। (नीतिवन 15:33)

इस और पवित्रस्वरूप के कई अन्य पदों में ज्ञान आज्ञाकारिता से आता है। अर्थात्, जब हम स्वरूप को परमेश्वर की प्रभुता के प्रति समर्पित कर देते हैं, तो हम उसके प्रकाश को समझने की अवसर से प्रभुता में आ जाते हैं।

परन्तु पत्र 15:33 में हमारे स्वभाव और इच्छा को इस हद तक भ्रम कर दिया है कि हम परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। और वास्तव में, हम उसके वचन के प्रति समर्पित होते हैं, अतः आज्ञापूर्वक हमारे परमेश्वर के आज्ञा नहीं मान सकते वे सज्जाई से हमारे ज्ञान भी तरीके सकते हैं। हमारे बाद में कहते हैं, जिस प्रकार आज्ञाकारिता हमारी अनुगामी करती है, जैसे ही पाप अनुज्ञान की ओर हमारी अनुगामी करता है।

पत्र 15:33 में यह प्राप्त होता है कि हम उस नेत्र का कुछ समानाधिकरण के रूप में रखा जाता है जिससे कि एक भाव दूसरे को प्रभुता करता है। उदाहरण के तौर पर, होम 6:6 को सुनें:

क्योंकि में बलिदन से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रस्तुत होता हूं, और होमबलियों से अधिक यह चाहता हूं कि लोग परमेश्वर का ज्ञान रखें। (होम 6:6)

इस पद में बलिदन की अपेक्षा विश्वासयोग्यता और होम बलियों की अपेक्षा परमेश्वर के आज्ञा की ज्ञानशालाओं को एक-दूसरे के समानाधिकरण रखा गया है, अर्थात् कि दूसरी ज्ञानशाला स्पष्टता के लिए पहली ज्ञानशाला को पुनः जोड़ता है। अतः, बलिदन होम बलियों का परम्परागतता है, और विश्वासयोग्यता, जो कि आज्ञाकारिता का ही एक रूप है, परमेश्वर के ज्ञान का परम्परागतता है।

अन्य स्थानों पर आज्ञाकारिता और ज्ञान को एक-दूसरे के लिए परिभाषा के रूप में दिया जाता है। उदाहरण के तौर पर विमेया 22:16 में यहोवा ने इन शब्दों को कहा: -13-

चलचित्र, अभ्यास ग्रांडिलिका एवं कई अन्य संस्थाओं के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएं।
बाइबल पर आधारित निर्णय लेना
अध्याय 8: अतिसत्य-संबंधी तृषिकोण: अच्छा होना

वह इस कारण सुख से रहता था क्योंकि वह दीन और दुरंत लोगों का न्याय
चुकता था। क्या यही मेरा ज्ञान रखना नहीं है? (विम्म्याय 22:16)

यहाँ परमेश्वर के ज्ञान को परमेश्वर के प्रति की गयी आज्ञाकारिता के आधार पर परिभाषित किया
गया है, विशेषकर न्याय करने के रूप में।

तीनीरा, परिवारशासन कभी-कभी एक को दूसरे के उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करने के द्वारा
आज्ञाकारिता और ज्ञान की मूलभूत नियमक के बारे में दिखाई देता है। होशे 4:1 पर ध्यान दें जहाँ भविष्यवक्ता ने इस
रूप में इसामाल पर दोष लगाया:

हे इसामालियों, यहोवा का चचन सुनो; इस देश के नियमितों के साथ यहोवा का
मुक्ति है। इस देश में न तो कुछ संज्ञाई है, न कुछ कल्पना और न कुछ परमेश्वर
का ज्ञान है। (होशे 4:1)

होशे ने उन तीन बातों को बताया जिनमें इसामाली असफल हो गए थे और जिनके फलस्वरूप
परमेश्वर उसको कोई बताया: वे अविनयवादी थे, वे प्रेम करने वाले नहीं थे, और वे परमेश्वर को नहीं
जानते थे। नैतिक उदाहरणों की इस सूची में परमेश्वर के ज्ञान का उल्लेख करने के द्वारा
होशे ने दर्शाया कि ज्ञान आज्ञाकारिता का है एक भाग है, और परमेश्वर को जानने की हमारी
एक नैतिक जिम्मेदारी है। अब आज्ञाकारिता और ज्ञान का सदृश एक ही अर्थ नहीं होता है। फिर भी विनयवादी
इन दोनों बिचारों को बहुत विभिन्न से जोड़ता है और बहुत ही महत्वपूर्ण रूप में सिखाया है कि यदि हम परमेश्वर
की आज्ञा नहीं करते तो हम उसे ज्ञान नहीं मिलते।

पतन ने मनुष्यात्मक की संबंधाज कर दिया। आदम और हव्वा पर परमेश्वर के द्वारा ने हर उस
मनुष्य की स्वभाव, इच्छा, और ज्ञान की भूमिका कर दिया जो भौतिक रूप से उनके द्वारा उत्पन्न हुए। और
इसके नैतिक परिणाम विनयवादी हैं: कोई भी मनुष्य ऐसा कुछ भी सोच, कह या कर नहीं सकता जो
नैतिक रूप से अच्छा हो। हमारे सारे बिचार, शब्द, और बात किसी न किसी रूप में पापमय होते हैं
क्योंकि हम पतन, पापी लोग हैं। इसलिए, जब भी हम नैतिक निर्णय लेते हैं, तो हमें उन बातों
के बारे में सोचना चाहिए जिनमें पतन ने हर एक मनुष्य को प्रभावित किया है।

सृष्टि और पतन के समय के दौरान अच्छाई और अतिसत्य के विचार पर चर्चा करने के बाद, हम
छटकारा के समय को देखने के लिए तैयार हैं, अर्थात् एक ऐसा समय जब परमेश्वर उन लोगों
को पुनर्भाषित करता है जो उद्धार के लिए उस पर भरोसा रखते हैं और उनका अच्छाई के लिए सामर्थ्य
देता है।

चुटकारा

छटकारा का समय पतन के ठीक बाद आया हुआ जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा दरया
दिखाई। उस समय भी जब उसने उनके पापों के लिए ज्ञान दिया। पिछले अध्यायों में, हमने इसे “पहला
सुमाचार” कहा है जब परमेश्वर ने पतन द्वारा की गयी ज्ञान की भरपाई के लिए छटकारा देने वाले को
भेजने का प्रस्ताव दिया।

परस्तु, छटकारा के समय ने पतन के सारे प्रभावों को एकदम से दूर नहीं कर दिया। बल्कि,
छटकारा एक भौतिक प्रक्रिया रहा है, और यह तब पुरा होता जब यीशु महिमा में पुनः आए। तब तक
विश्वासियों और सारे मनुष्यों पर पतन के परिणाम निर्देश जारी रहे।

-14-

चलचित्र, अभ्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।
प्राणी और अच्छाई बात देंए बात बाइबल हमारी से में और घृणा मनसंदेह पुराने तुम्हें हमारा मनयमि नैया देिया। 

स्वभाव

आपको याद होगा कि हमारा स्वभाव ही हमारा मूलभूत चरित्र है; हमारे अस्तित्व का केन्द्रीय पहलू। और जैसा कि हम देख चुके हैं, हमारा पतित स्वभाव बुरा है। हम परमेश्वर से वेर रस्ते हैं और पाप से प्रेर करते हैं, और हम नैतिक अच्छाई के आयोज हैं।

परन्तु जब हम समीह में छुटकारा पाते हैं, तो हमारा स्वभाव नया हो जाता है। जब पतित आत्मा हमें नया जन्म देता है तो वह हमें अच्छा स्वभाव देता है, ऐसा स्वभाव जो परमेश्वर से प्रेर करता है और पाप से घुंघरा करता है। और यह हमारी नैतिक योग्यता को पुनर्स्थापित करता है जिससे हम सदृश अच्छाई के योग्य बन जाते हैं। यहेजे क्रेल 36:26 का सुनौ जहाँ परमेश्वर ने समीह में आने वाले भविष्य के छुटकारे के बारे में बात की:

में तुम की नया मन दूंगा, और तुम हाँ भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा; और तुम हाँ देह में से पतन का हदय निकाल कर तुम को मास का हदय दूंगा।

(यहेजे क्रेल 36:26)

और रोमियो 6:6-11 में पौलस ने इस प्रकार इस विषय के बारे में बात की:

हमारा पुराना मनुष्यवच उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का जरीय स्वयं हो जाए, ताकि हम आत्मा का पाप के दासत्व में न रहे। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छुटकर भर्मी ठहरा... तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा,

परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो। (रोमियो 6:6-11)

पुराने और नये नियम दोनों की गवाही यह है कि पति मनुष्य में पापी हदय और आत्माएं है।

परन्तु जब परमेश्वर हमें छुटाता है, तो वह हमारी पुनः रचना करता है, हमें नए हदय और आत्माएं देता है जो पापी नहीं बल्कि भर्मी हो। और इस नए स्वभावों के साथ हम पहली बार परमेश्वर से प्रेर कर सकते हैं और उसके चार के प्रति सम्मिलित हो सकते हैं और इस प्रकार उसकी आत्माएं को प्राप्त कर सकते हैं।

निस्देह, हमारे नए स्वभावों के साथ भी हमारा छुटकारा अभी तक पूर्ण नहीं हुआ है, हम अभी भी पाप के द्वारा विकृत हैं। इसीलिए मरकृस 10:18 में यीशु ने यह कथन कहा:

कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थातः परमेश्वर। (मरकृस 10:18)

छुटकारा पाई हुई मनुष्यवातिः में एक हद तक अच्छाई होती है, परन्तु हम परमेश्वर के समान सिद्ध प्राप्ती नहीं हैं। फिर भी, हमारे नए स्वभाव परमेश्वर के लिए यह संभव बनाते हैं कि वह हमें अद्वितीय रूप में आत्मित करेगा।
बाइबल पर आधारित निर्णय लेना
अध्याय 8 : अस्तित्व-संबंधी धृष्टिकोण: अच्छा होना

मन में छुटकारा पाए हुए स्वभाव की इस धारणा के साथ हमें हमारी इच्छा की पुनर्स्थापना की और मुद्रा चाहिए जो तब होती है जब हम छुटकारा को अनुभव करना आरंभ करते हैं।

इच्छा

हमारी इच्छा हमारी व्यक्तिगत क्षमता है जो निर्णय लेने, चुनने, अभिलाषा करने, आशा करने और इरादा करने की क्षमता रखती है। जैसा कि हम देश चुके हैं, अपने पतन के लिए असंभव कर दिया कि हम शुद्ध और धर्मी रूपों में हमारी इच्छाओं का प्रयोग करें। पीलुस ने इस श्रद्धा का वर्णन गुणामी या दासत्व के रूप में किया और यह सिखाया कि हमारी पतित और छुटकारा न पायी हुई इच्छाएं उस पाप के गुणाम हैं जो हमारे भीतर वास करता है। पाप के प्रति इस गुणामी के कारण हमारे अन्दर ऐसे मनोसृज्जों को करने की क्षमता नहीं है जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो और हमारे अन्दर उसको प्रसन्न करने की कोई अभिलाषा भी नहीं है।

परन्तु जब हम मसीह में विश्वास में आते हैं, तो पाप का हमारी इच्छा पर अधिकार टुट जाता है और इसलिए हमें पाप की अभिलाषा करने या इस पुष्टि है। इससे में बढ़कर, पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करने का लाभ है और हमारी इच्छाओं को सामाजिक बनाता है और परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए प्रेषित करता है। पीलुसके 36:27 में यह नोवा ने छुटकारे के इस पहलू के बारे में बात की, जहाँ उन्होंने छुटकारे के साथ इस आशीर्वाद को भी प्रदान किया:

और जैसा कि पीलुस ने फिलिप्पियों 2:15-18 में लिखा:

इसलिए हमें पाप का वातावरण प्राप्त करने के लिए, क्योंकि हमारी इच्छा है, हमें अपनी बुद्धि के लिए अपने अंगों में जितने से ज्यादा अच्छी भावना की इच्छा है। (फिलिप्पियों 2:12-13)

अब हमें यह याद रखना है कि हमारी इच्छा के नए हो जाने से हमारे जीवन की पाप की समस्या पूरी तरह से हम नहीं होती है। जैसा कि हमें अन्दर बना रहता है, इसलिए हमें निरंतर इसके विरूद्ध लड़ने जरूरी है। परन्तु इसके यह है: हम अब पाप के गुणाम नहीं रहते, और इसकी बाता मानने को मजबूर नहीं होते। परन्तु इस पाप का विरोध करना बहुत कठिन हो सकता है। पीलुस ने रोमियों 7:21-23 में इस संघर्ष का वर्णन किया, जहाँ उन्होंने मसीही जीवन के बारे में इन शब्दों को लिखा:

जब में भलाइ करने की इच्छा करता हूँ, तो बुराई भी पाप का आती है। क्योंकि में भीतरी मुन्यात्मक से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न होता है। परन्तु इसे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में दालती है जो मेरे अंगों में है। (रोमियों 7:21-23)

हम इस प्रकार से मानवीय इच्छा पर बाइबल की जिक्र का सारागंभित कर सकते हैं: सूत्र के समय हमारी इच्छा पाए हुए स्वभाव की इस धारणा के साथ हमें हमारी इच्छा की पुनर्स्थापना की और मुद्रा चाहिए जो तब होती है जब हम छुटकारा को अनुभव करना आरंभ करते हैं। इसके साथ-साथ पाप का विरोध करने की क्षमता नहीं है जो हमारे अन्दर वास करने आया और हमारी इच्छा को गुणाम बना लिया।

-16-

चलचित्र, अभ्यास मार्गस्वरूप एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएं।
छुटकारे में, हमारी इतनी अपूर्वत्यापित हो जाती हैं, और पाप का स्वामित्व टूट जाता है जिससे हम एक बार फिर पाप का विरोध करने में सक्षम हो जाते हैं। और पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करती है ताकि हमें पाप के विरुद्ध समाचार दे और हमें प्रेरित करे।

दुष्कर्मवशेष, छुटकारे के इस वर्तमान चरण में पाप अभी भी हमारे अन्दर वास करता है और हमारे अन्दर पाप के प्रभाव और पवित्र आत्मा के प्रभाव के बीच संघर्ष चलता रहता है। परन्तु जब गीता हमारे छुटकारे को पूरा करने के लिए वापिस आयेगा तो हम पाप के हमारे अन्दर निवास से पूरी तरह से मुक्त हो जायेगे और केवल पवित्र आत्मा के द्वारा प्रभावित होगे जिससे बाह्य भी हम कभी पाप को दिखावे न चुनें।

हमारे व्यक्ति और इस पर ध्यान देने के बाद, हम छुटकारे के समय हमारे ज्ञान की पूर्णता के बारे में बात करने के लिए तय होते हैं।

ज्ञान

पहले की तरह ज्ञान के बारे में हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी: पहला, प्रकाशन के प्रति हमारी पहचान, दूसरा, प्रकाशन के बारे में हमारी समझ, और तीसरा, प्रकाशन के प्रति हमारी आवाजाह्नित। अगर हम इस बात से आर्थ करेंगे की छुटकारे के समय प्रकाशन के प्रति हमारी पहचान कैसे पूर्णता होती है।

प्रकाशन के प्रति हमारी पहचान

जैसे कि आपको याद होगा, पतन पवित्र आत्मा से प्राप्त होने वाले उस प्रकाशन की और मनुष्यवाति की पहचान की पूरी तरह से रोक देता है, जो कि ज्ञान या समझ का एक दैवीय विकास है जो कि मुख्य रूप से विद्वान है।

हमने यह भी देखा था कि पतन पवित्र आत्मा से मिलने वाली उस आत्माकृति अगुवाई के प्रति पहचान को भी रोक देता है, जो ज्ञान या समझ का दैवीय विकास है जो कि मुख्य रूप से भावनात्मक है।

परन्तु छुटकारे में हमारे पाप पवित्र आत्मा की संबंधों के प्रति और अधिक पहचान मिल जाती है।

बल्कि हम पतन पवित्र आत्मा के प्रति पहचान के प्रकाशन के प्रति भी खुशी करने के लिए पहचान के प्रकाशन के प्रति अपने संबंधों का परम्परागत बनाते हैं। जो हमारे उद्देश्य का भाग है। यह हमारे विचार को परम्परागत बनाता है और हमें भक्तिपूर्ण अनुभव देता है। उदाहरण के तौर पर, 1 उदाहरण 2:27 में उनके शब्दों को सुनें: (पवित्र जन का) अभिषेक... तुम्हें सब बातें सिखाता है। (1 उदाहरण 2:27)

और इफ़िरों 1:17 में पौलुस ने प्रकाशन और आत्माकृति अगुवाई के बारे में इस तरह से कहा:

हमारे पाप गीता मरम्मत का परम्परागत जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाशन का आत्मा दे। (इफ़िरों 1:17)

प्रकाशन के प्रति हमारी पहचान के अप्रतिक्रिया छुटकारा प्रकाशन के प्रति हमारी समझ को भी पूर्णता करता है, और वह भी पवित्र आत्मा की सेवा के द्वारा।

प्रकाशन की समझ

जैसा कि हम देख चुके हैं, पतन के कारण हम परम्परागत शब्द बन जाते हैं और उसके संबंध का विरोध करते हैं जिससे हम परम्परागत से शब्द ज्ञान को स्वीकार करने की अपेक्षा हम झूठ में अपने आपको लगाये रखते हैं। परन्तु जब हम उद्देश्य पाते हैं तो पवित्र आत्मा हमारे हदय को बदल देता है जिससे हम
परमेश्वर से बैर करने की अपेक्षा उससे श्रम करने लगते हैं। और वह हमारे मनों को नया कर देता है जिससे हम परमेश्वर द्वारा प्रकट समझ को समझ पाने के योग्य हो जाते हैं।

1 कुलस्त्रियों 2:12-16 में पीलूस ने इस प्रकार से प्रकाशन की हमारी छुटकारा-प्राप्त समझ को स्पष्ट किया:

हम ने यह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जाने, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं... शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्तिता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है... परन्तु हम भी परीमा का मन है। (1 कुलस्त्रियों 2:12-16)

हमारे भीतर परमेश्वर के आत्मा के निवास के बिना हम परमेश्वर के सत्य को समझ नहीं पाएँगे। परमेश्वर के विस्तृत हमारे विचारों हमारे विचारों को धुलता कर देता है और हम परमेश्वर के परिचय और कायम के बारे में सब प्रकार की भावनाओं पर विचार कर लेते हैं। परन्तु पवित्र आत्मा हमारे हृदयों और मनों की स्वस्ति करता है और हम भोला देने की पाप की शक्ति को नाश करता है एवं प्रकाशन को समझ में हमें सामर्थ देता है। कुलस्त्रियों 1:9 में पीलूस के शब्दों को सुनें:

जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्राप्ति करने और बिनती करने से नहीं चुकते कि तुम सारे आत्माका और समझ सहित परमेश्वर की दिलचस्पी की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ। (कुलस्त्रियों 1:9)

पीलूस जानता था कि किसी भी विश्वासी में परमेश्वर के प्रकाशन की यह समझ नहीं है। इसलिए, उसने कुलस्त्रियों के विचारों के लिए और अधिक समझ को प्राप्त करने हेतु निरंतर प्राप्ति की। और उनके समान हमें भी पवित्र आत्मा की निरंतर सेवा की जरूरत है ताकि हमारी अपनी समझ बढ़ सके।

अब तक, हम देख चुके हैं कि छुटकारा प्रकाशन की ओर हमें पुनःचरण और प्रकाशन का एक उचित समझ को प्राप्त करने में सहायता करते हैं। इस समय हम जब भत करने के लिए तैयार हैं कि छुटकारा किस प्रकार प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता को बढ़ाने के द्वारा हमारे जान को पुनर्त्यागित करता है।

प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता

इस अध्याय में पहले हमने दो रूपों में आज्ञाकारिता और जान के बीच का संबंध का वर्णन किया है। पहला, पवित्र आत्मा में आज्ञाकारिता और जान के बीच एक आपसी समर्थन है। और दूसरा, बािबल में ये दो विचार एक-दूसरे से अभिप्रेत है।

और हमारी चार्ट कि किस प्रकार छुटकारा प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता को बढ़ाता है, यह सर्गके का अनुसरण करनी है। पहला, हम इस वास्तविकता के बारे में बात करने कि छुटकारे और आज्ञाकारिता के बीच एक आपसी रिश्ता है। और दूसरा, हम उन कुछ रूपों के बारे में बात करने हिंद में यह कहा जा सकता है कि बािबल में ये दो विचार एक-दूसरे से अभिप्रेत हैं, छुटकारा आज्ञाकारिता है। हम इस वास्तविकता के साथ आरंभ करूँगे कि छुटकारा आज्ञाकारिता की ओर अघुवाई करता है।

पवित्र आत्मा यह स्पष्ट करता है कि छुटकारे की एक मुख्य विशेषता यह आज्ञाकारिता है जो यह विवासियों के जीवन में उपनिवेश करता है। पवित्र आत्मा की अघुवाई और हमारे अन्दर बास करने वाली सामग्री से विवासियों के चारों ओरों से अलग ब्यवहार करते हैं। पवित्र मनुष्यजाति परमेश्वर से बैर रहती है और उसकी आज्ञा नहीं मान सकती। परन्तु छुटकारा पाई हुई मनुष्यजाति परमेश्वर से प्रेरणा करती है और उसकी आज्ञा भी मानती है। प्रेति यूहाना ने इस विचार के बारे में बार-बार लिखा है, जैसे कि 1 यूहाना 2:3-6। वहाँ उसके शब्दों को सुनें:
हम उस की आज्ञाओं को मानने, तो इस से हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं।

जो कोई यह कहता है, जिसे हम अपने बाल्यावस्था में भी समझ पाते हैं और हम उस की आज्ञाओं को सही बता सकते हैं, वह ढूढ़ा है; और हम उस में सत्य नहीं। पर जो कोई उसके बचन पर चले, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है; हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उस में हैं। सो कोई यह कहता है, कि हम उस में चना रहता हूँ, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था। (1 यूहुस्व 2:3-6)

पवित्रीयता आत्मा के इस कार्य के बारे में प्रायः आत्मा के फल के रूप में बात करता है।

उद्देश्य के तरीके पर, मात्र अध्याय 3 में यूहुस्व वर्तमान आत्मा के रूप में आत्मा के फल के रूप में बात करता है। और ग्लाटियो 5 अध्याय में पौतुस ने गैरविश्वासियों के जीवन में पाप द्वारा उपजने वाली सुरू बातों के विषय में पवित्र आत्मा द्वारा उपजने अनचाहे बातों को दर्शाया। ग्लाटियो 5:22-23 में पौतुस के शब्दों को सुनें:

पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, जानन्द, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नग्रज, और संयम है। (ग्लाटियो 5:22-23)

इसकी हमारे अनदर निवास करने वाली और चुटकारा देने वाली उपस्थिति के जरिये पवित्र आत्मा हमारे जीवन में अभावित करे के फल के रूप में उपजना करता है। यह कई रूपों में परमेश्वर की आज्ञा मानने में हमारी अबाबावी करता है ताकि हम नैतिक और आत्मगत गुणों को प्रकट करे।

इस बात को देखने के बाद कि चुटकारा आज्ञाकारिता की ओर हमारी अबाबावी करता है, अब हम इस वास्तविकता की ओर मुड़ा चाहिए कि ये दोनों विचार एक-दूसरे से अभिन्न हैं- अर्थात् चुटकारा पाने का अर्थ है परमेश्वर की आज्ञा मानना।

पवित्रीयता के कई अनुच्छेद दर्शाते हैं कि चुटकारा और आज्ञाकारिता एक ही बात है। विश्वसन है, जब परमेश्वर की आज्ञा मानने वाली को ही विश्वासियों के रूप में परिभाषित करने के द्वारा ऐसा करते हैं। कभी-कभी यह इसलिये होता है कि कंधी मसीह की ओर आना आज्ञाकारिता का ही एक कार्य है।

इसमें मसीह पर विश्वास करना और हमारे पापों से पवश्वाप के वेदना बातों भी शामिल होती है। उद्देश्य के तरीके पर, 1पतरस 1:22-23 में प्रेमित ने यह निर्देश दिया:

सो जब कि तुम ने भाईयाँर की निश्चयता प्रति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन लगाए कर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो।

क्योंकि तुमने... नया जन्म पाया है। (1पतरस 1:22-23)

पतरस में सब जन्म मसीह में आने के रूप में कहा। और उसके इस मसीह में आने के परिवतन को सत्य के प्रति आज्ञाकारिता के रूप में पहचाना। अन्य स्थानों पर चुटकारा की आज्ञाकारिता के साथ जोड़ा जाता है क्योंकि चुटकारा पाए हुए लोग कई भिन्न-भिन्न रूपों में परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होते हैं। हम उससे प्रेम करते हैं इसलिये उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। जैसे कि इद्रानियो 5:9 कहता है:

(यीशु) अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदा काल के उद्दार का कारण हो गया। (इद्रानियो 5:9)

इस सन्दर्भ में इद्रानियों का लेखक स्वयं में यीशु के निरंतर चलन रहे याज्ञिक कार्य के बारे में कह रहा था, जिसमें वह हमारे लिये अपनी लगातार मध्यस्थता की प्राथमिक के द्वारा हमारे उद्दार को बनाये रखने का आदेश दिया।

-19-

चलचित्र, अभिषेक मार्गंदिपिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।
रस्ता है। यह कार्य वह उन सबके लिए करता है जिनके जीवन उसके प्रति आजादीकी नजर से भर हो, और उन सबके लिए भी पवित्र आत्मा पर विश्राम करते हो एवं जिनके अन्दर पवित्र आत्मा का वास हो।

जब हम छुटकारा और आजादीकी के बीच संघ संघ पर ध्यान देते हैं तो यह बात हम अपने मन में रखना चाहते हैं। छुटकारा परमेश्वर के प्रति हमारी आजादीकी को उत्पन्न करता है, और परमेश्वर के प्रति आजादीकी परमेश्वर और उसके कार्य करने के तरीकों का ज्ञान उत्पन्न करता है।

एक बार फिर यदि करने देंगे मानो ज्ञान का आयुर्य से बुझ कर दिया था जिससे हमारे लिए परमेश्वर की आजादी का असंभव हो गया था। उसी प्रकार, छुटकारा हमारी आजादीकी को पुनर्स्थापित करने के द्वारा पतन के श्राप को उलट देता है, जिसके द्वारा परमेश्वर का ज्ञान उत्पन्न होता है।

इस प्रकार मे कि छुटकारा परमेश्वर के प्रति हमारे ज्ञान का पुनर्स्थापित करता है, इससे हमें चकित नहीं होना चाहिए कि परमेश्वर प्राप्त: छुटकारा को परमेश्वर के प्रति ज्ञान के आचरण पर सामर्थ्य करता है। इस ज्ञान में अयुक्त से दो अच्छे ज्ञान होता है, जैसे कि सुमाया के सत्य का ज्ञान। परन्तु इसके अन्दर अनुभवशील एवं संबंधात्मक ज्ञान भी शामिल होता है, जैसे कि हम एक व्यक्ति को चाहने के बारे में बात करते हैं। हम इस शिक्षा को भवन 36:10, या मिन्नेसें 11:32, 2 यूहा 1 इत्यादि स्थांत्र न पाते हैं। जैसे कि पीरु ने यूहा 17:3 में प्रार्थना की:

अननत जीवन यह है, कि ये तुझ आदेश सदृश परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने। (यूहा 17:3)

अतः, छुटकारा के समय में हमारे स्वभाव के नए हो जाने, हमारी इच्छा की पुनर्स्थापित, और परमेश्वर के प्रति हमारे से एक भाव नहीं होता है। और हमारे स्वभाव के इस छुटकारे के द्वारा हमारे प्रकार को करने की योग्यता को प्राप्त करते हैं। अर्थात् ऐसे बातों को कहना, सोचना और करना जिनके परमेश्वर आरोपित करता है।

-20-

चलचित्र, अभ्यय मराठिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।
वास्तविकताओं को मन में रखते हैं तो हम हमारे महिमावान परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले रूपों में हमारे नैतिक प्रश्नों का उत्तर देने की योग्यता को प्राप्त कर सकेंगे।